MAHARASHTRA STATE COUNCIL OF EXAMINATION, PUNE

Government Commercial Certificate Examination

4 JULY, 2018

[Time : 14-00]

(Total Marks for Sections I and II : 100)

HINDI TYPEWRITING

(40 Words Per Minute)

SECTION - II

(Time Allowed : 7 Minutes)

हिंदी टंकलेखन

(४० शब्द प्रति मिनट)

विभाग - २

(समय : ७ मिनट)

सूचना : निम्नांकित गद्यखंड को दोहरे अंतर में टंकलिखित करें । गद्यखंड को दुबारा टंकलिखित न करें। बायीं ओर १५ स्पेस का हाशिया (मार्जिन) छोडिए ।

[अंक : ४०]

दीपावली इस साल भी आ गई । हर साल ही आती है । न जाने किस भले आदमी के मन में किस शुभ मुहूर्त में दीपकों के उत्सव की बात आई थी । पंडितों ने इस पर्व का इतिहास खोजने का प्रयत्न किया है । भक्तों का विश्वास कुछ ओर है, पंडितों के अनुसंधान कुछ ओर, मगर उत्सव पुराना है । चंचला लक्ष्मी का प्रसाद न जाने कितने लोगों को प्राप्त हुआ और कितने उससे वंचित हो गए पर दीपमाला का उत्सव नहीं रुका । साधारणत: यह विश्वास किया जाता है कि यह लक्ष्मीपूजा का दिन हे । बंगाल में दूसरी परंपरा है । वहाँ इस तिथि को काली जी की पूजा होती है । लक्ष्मी पूजा वहाँ आश्विन मास की पूर्णिमा के दिन होती है । उसे कोजागर पूर्णिमा कहते हैं । पर पूजा लक्ष्मी की हो या काली की, दीपमाला सर्वत्र जगमगा उठती है । देवी - देवता और उनकी पूजा गौण है, मनुष्यचित्त का उल्लास प्रधान और यह उत्सव उल्लास का ही है ।

वैसे यह पर्व इतने दिनों तक जीता रहा, निश्चय ही इसके दीर्घ इतिहास में ऐसे अवसर आए होंगे कि जब शक्तिशाली समझे जानेवाले लोगों को यह उत्सव पसंद नहीं आया होगा ।

आज से हजारों वर्ष पहले मनुष्यने निश्चय किया था कि वह दरिद्रता की अवस्था में नहीं रहेगा, वह सामाजिक रुप में समृद्ध रहेगा । एक व्यक्ति नहीं, एक परिवार नहीं, एक जाति भी नहीं, बल्कि समूचा मानवसमाज समृद्धि चाहता है, अमंगल का अंत चाहता है । दीपावली का उत्सव उसी सामाजिक मंगलेच्छा का दृश्यमान मूर्तरुप है ।

चारों ओर जब अभाव का करुण हाहाकार सुनाई दे रहा है, दीपावली अपना मंगल संदेश लेकर आई है । अब मनुष्य की मंगलेच्छा जिएगी और बंधनो से मुक्त होगी ।